२९८

Hindi Granth Ratnakar Series No. IX.

चरित्रगठन और मनोबल।

दयाचन्द्र गोयलीय, बी. ए.

हिन्दी-ग्रंथरत्नाकर सीरीज नं० ९.

चरित्र गठन और मनोबल।

श्रीयुत राल्फ वाल्डो ट्राइनके "करैक्टर बिल्डिंग थाट पावर" नामक ग्रन्थका स्वतंत्र अनुवाद।

लेखक—

श्रीयुत बाबू दयाचन्द्रजी गोयलीय, बी. ए.।

प्रकाशक—

हिन्दी-ग्रन्थरत्नाकर कार्यालय, बम्बई।

मार्गशीर्ष, १९७१ वि०.

नवम्बर १९१४.

प्रथमावृत्ति] [मूल्य तीन आने।

प्रस्तावना।

इस छोटी सी पुस्तकको पाठकोंकी भेंट करते हुए मुझे इससे अधिक कहने-की कोई अवश्यकता नहीं मालूम होती कि यह अँगरेजी भाषाके सुप्रसिद्ध लेखक श्रीयुत राल्फ वाल्डो ट्राइन महोदय (Ralph Waldo Trine) की, करैक्टर बिल्डिंग-थाट पावर ' (*Chracter Building- Thought Power*) नामक अँगरेजी पुस्तकका स्वतंत्र अनुवाद है। ट्राइन महाशयका नाम ही उनके ग्रंथोंकी उत्तमताके विषयमें काफी प्रमाण है। इस पुस्तकका अँगरेजी भाषामें इतना आदर हुआ है कि गत १३ वर्षोंमें इसकी ७७ हजार प्रतियाँ बिक चुकी हैं। इसका विषय इसके नामसे ही प्रगट है। इसका सारांश यह है कि हम स्वय अपने मनोबलसे अपना चरित्र गठन कर सकते हैं। हमारे स्वभाव वास्तवमें हमारे विचारोंसे ही बनते हैं। यदि हम अपने विचारोंको ठीक कर सकें तो स्वभावका ठीक करना कुछ भी कठिन नहीं है।

यह एक चरित्रविषयक पुस्तक है और हमारे जीवनका आधार एक मात्र चरित्र पर है, अतएव हमने इस पुस्तकका हिन्दी अनुवाद करना अत्यावश्यक समझा। हिन्दीमें इस प्रकारकी पुस्तकें बहुत ही कम हैं। यद्यपि हमने इस पुस्तकका स्वतंत्र अनुवाद किया है, तथापि मूल्य लेखकके भावोंकी रक्षाका शक्तिभर प्रयत्न किया है। हमें इसके लिखनेमें श्रीयुत मुफ्ती मोहम्मद अनवारुल हक साहेब एम. ए, मुंशी फाजिल, मन्त्री शिक्षाविभाग रियासतभोपालके इसी पुस्तकके उर्दू अनुवादसे बहुत सहायता मिली है जिसके लिए हम मुफ्ती साहबके हृदयसे आभारी हैं।

लखनऊ,
१०—८—१४.

दयाचन्द्र गोयलीय।

"श्री गेरमल शारदा - सदन"

चरित्र-गठन और मनोवल।

हम अपने जीवनके प्रत्येक समयमें ऐसी अनेक नई नई आदतें सीखते रहते है जिनका हमें ज्ञान भी नहीं होता। उनमेंसे कुछ आदतें तो बहुत अच्छी होती हैं, परन्तु कुछ बहुत बुरी होती हैं। कुछ ऐसी होती हैं कि स्वयं तो वे बहुत बुरी नहीं होतीं, परन्तु आगे चल कर उनके फल बहुत ही बुरे होते हैं और उनसे बहुत कुछ हानि, कष्ट और पीड़ा पहुँचती है। कुछ उनसे बिल्कुल उलटी होती हैं जिनसे सदा हर्ष और आनन्द बढ़ता रहता है।

अब प्रश्न यह है कि क्या अपनी आदतें बनाना सदा अपने अधिकारमें है? क्या यह बात हमारे हाथमें है कि हम जिस तरहकी चाहें अपनी आदतें बना लें, जिस आदतको चाहें ग्रहण करें और जिस आदतको चाहें छोड़ दें? इसका संक्षिप्त उत्तर यह है कि हाँ, यह बात बिल्कुल हमारे हाथमें है। हम अपना चरित्र चाहे जैसा बना सकते हैं। मनुष्य वही हो जाता है जो वह होना चाहता है। यह शक्ति मनुष्यमात्रमें स्वाभाविक है। परन्तु यह शक्ति उस समय तक कुछ भी कार्यकारी नहीं, जब तक इसका उपयोग मालूम न हो। अतएव पहले इसका उपयोग बताना ज़रूरी है।

सबसे पहले मनुष्यको इस स्वाभाविक शक्तिके अस्तित्व और कार्यका सम्यक् श्रद्धान होना चाहिए। पश्चात् उस महान् नियम पर विचार करना चाहिए जिसपर चरित्रगठनकी नींव रक्खा जाती है, जिसके अनुसार प्रवृत्ति करनेसे पुरानी, बुरी, खोटी और नीच आदतें छूट जाती हैं, और नई, अच्छी और ऊँची आदतें पैदा हो जाती हैं, और जिससे जीवनमें सर्वदेश वा एकोदेश परिवर्तन हो सकता है। इसके लिए केवल एक बातकी ज़रूरत है और वह यह है कि मनुष्य पहले उस नियम पर सच्चे दिलसे विचार करे, और फिर उसके अनुसार कार्य करनेका दृढ़ संकल्प करे।

मनोबल ही मनुष्यके सम्पूर्ण कार्योंका उत्तेजक है। इसका अभिप्राय यह है कि मनुष्यका प्रत्येक कार्य जो संकल्प द्वारा किया जाता है एक विचारका परिणाम है। जिस कार्यका जितना अधिक विचार किया जाता है वह कार्य भी उतना ही अधिक होता है। जो कार्य वार बार किया जाता है, वह धीरे धीरे आदतका रूप धारण करने लगता है। अनेक आदतोंके समूहका नाम ही चारित्र है। इसीको अँगरेज़ीमें करैक्टर Character और हिन्दीमें 'चालचलन' कहते हैं। इसलिए तुम जिस तरहके काम करना चाहते हो और जैसा अपने आपको वनाना चाहते हो उसी तरहके विचार तुम्हारे दिलमें आने चाहिए। जो काम तुम करना नहीं चाहते, जिस आदतको तुम ग्रहण करना नहीं चाहते, उनके पैदा करनेवाले विचार कभी क्षणमात्रके लिए भी तुम्हारे मनमें न आने चाहिए।

यह एक मानी हुई वात है और इसमें किसीको तनिक भी विवाद नहीं है कि यदि मनमें कोई विचार कुछ समयतक वरावर आता रहे तो वह (विचार) धीरे धीरे मस्तकके उस भागमें पहुँच जायगा कि जहाँ

वह अंतमें कार्यका रूप अवश्य धारण कर लेगा; अर्थात् जहाँ पहुँच कर वह शरीरको अपने अनुसार कार्य करनेके लिए लाचार कर देगा। अब यदि वह विचार अच्छा है तो उसका फल भी अच्छा होगा और यदि वह विचार बुरा है तो उसका परिणाम भी बुरा होगा। हत्या, वध आदि जितने भी बुरे कर्म हैं सब इसी तरह होते हैं और इनके विपरीत जितने उत्तम कार्य हैं, वे भी इसी तरह होते हैं।

समझने और याद रखनेकी बात है कि प्रत्येक कार्यका कारण विचार है; परन्तु किसी प्रकारके विचारको मनमें रखने या न रखनेका हमें पूर्ण अधिकार है। हम अपने मनके स्वतंत्र राजा हैं। पूर्णरूपसे वह हमारे वशमें है और हमको सदैव उसे अपने वशमें रखना चाहिए। यदि कभी वह वशमें न रहे, तो उसके वशमें करनेका एक उपाय है। उसके अनुसार चलनेसे हम मन और विचार दोनोंको अपने अधिकारमें कर सकते हैं।

मनुष्यके शरीरमें यह गुण है कि उसमें किसी कामको बार बार करनेसे उस कामके करनेकी शक्ति बढ़ती जाती है। पहली बार किसी कामके करनेमें जितनी कठिनाई होती है उससे कहीं कम उसी कामको दूसरी बार करनेमें होती है और उससे भी कहीं कम तीसरी बार करनेमें और तीसरी बारसे भी कम चौथी बारके करनेमें होती है। गरज यह कि हर बार कठिनाई कम होती जायगी और आसानी अधिक मालूम होती जायगी। धीरे धीरे एक दिन वह काम बिल्कुल आसान हो जायगा और उसमें ज़रा भी कठिनाई न रहेगी। परन्तु हाँ, उससे उल्टा [illegible]में बड़ी कठिनाई मालूम होगी। ठीक [illegible] पहली बार ज़रा कठिनाईसे [illegible] तीसरी बार उससे भी

ज्यादह आसानीसे, इसी प्रकार ज्यादह ज्यादह आसानी होती जायगी और वह विचार धीरे धीरे मनका एक अंग हो जायगा। अब इसको दूर करना कठिन हो जायगा। परन्तु स्मरण रहे कि संसारमें कोई काम कठिन भले ही हो, परन्तु असम्भव कोई भी नहीं है। धीरे धीरे अभ्यास करनेसे कठिनसे कठिन काम भी सरल हो जाता है। यह प्रत्यक्षसिद्ध सिद्धान्त सर्वमान्य है। इसमें किसीको कोई भी शंका नहीं हो सकती है। इसी सिद्धान्तको दृष्टिमें रखते हुए प्रत्येक मनुष्य अपने विचारोंको वशमें कर सकता है और उन पर अधिकार पा सकता है। यदि शुरूमें सफलता न हो, या कुछ समय तक होती न दीखती हो तो कोई परवा नहीं। निराश कभी मत होओ। उद्योग कभी निष्फल नहीं जाता। बार बार कोशिश करो। बार बारकी कोशिशसे एक न एक दिन अवश्य सफलता होगी। जिस कामको तुम कठिन समझते हो वह सरल हो जायगा और जिन विचारोंको अभी तुम वशमें नहीं कर सकते थे उन्हीं विचारों पर तुमको पूर्ण अधिकार हो जायगा।

अतएव प्रत्येक व्यक्ति अपने विचारोंको वशमें कर सकता है और मनुष्यमात्र इस शक्तिको प्राप्त कर सकता है कि चाहे जिस प्रकारके विचारोंको अपने मनमें आनेसे रोक दे। क्योंकि यह एक सर्वमान्य सिद्धान्त है और हमें इसे कभी न भूलना चाहिए कि किसी भी कामके लिए हमारी प्रत्येक बारकी कोशिश उस कामको ज्यादह आसान बना देती है, चाहे शुरूमें असफलता ही क्यों न हो। अर्थात् चाहे शुरूमें हमें किसी काममें सफलता न हो, तो भी ज्यों ज्यों वह काम किया जायगा त्यों त्यों उसमें ज्यादह आसानी होती जायगी। ऐसी दशामें असफलतामें भी सफलता है। क्यों कि उद्योगमें

तो असफलता होती नहीं और उद्योग चाहे जब किया जाय काम करनेकी शक्तिको ही बढ़ाता है। एक न एक दिन अवश्य सफलता होगी और हमारी मनोकामना पूर्ण होगी। अतएव यह बात सिद्ध है कि हम अपने विचार चाहे जिस तरहके बना सकते हैं और चाहे जैसा अपना चरित्र निर्माण कर सकते हैं।

यहाँ पर दो तीन उदाहरण दिये जाते है। आशा है कि उनसे यह विषय बिल्कुल स्पष्ट हो जायगा।

मान लो कि एक आदमी किसी बड़ी कम्पनीका कोषाध्यक्ष (खजानची) या किसी बैंकका मैनेजर है। एक दिन उसने एक समाचारपत्रमें पढ़ा कि एक मनुष्यने सिर्फ चार ही पांच घंटोंमें किसी सौदेमें कई लाख रुपये कमा लिये। थोड़े ही दिनके बाद उसने फिर एक ऐसे ही मनुष्यका हाल पढ़ा। अब उसके जीमें भी ऐसी ही लालसा पैदा होने लगी। वह विचार करने लगा कि ये आदमी कितनी थोडी देरमें लखपती हो गये। मैं भी इन्हीं-का अनुकरण करके शीघ्र लखपती हो जाऊँगा। यही विचार उसके मनमें रात दिन घूमने लगा। उसने ऐसे दो चार आदमियोंका हाल तो पढ़ा जो एक बारगी अमीर हो गये, परन्तु यह उसने कभी नहीं सोचा कि ऐसे भी बहुतसे आदमी हैं जो ऐसा करनेसे अपनी सारी पूँजी खोकर भिखारी हो बैठे हैं। उसकी इच्छा दिनोंदिन बढ़ने लगी। अन्तमें एक दिन उसने अपनी तमाम पूँजी वैसे ही किसी काममें लगा दी। परिणाम वही हुआ जो प्रायः ऐसी दशाओंमें हुआ करता है, अर्थात् उसको घाटा पड़ गया। उसकी सारी पूँजी जाती रही। अब वह विचार करता है कि अमुक कारणसे मुझे सफलता नहीं हुई। यदि मेरे पास और रुपया होता तो मैं अवश्य घाटेको

पूरा कर लेता और साथमें बहुत कुछ और भी कमा लेता। अब यह विचार बार बार उसके मनमें आता है, और वह सोचता है कि मेरे हाथमें बेंकका जो रुपया है, यदि मैं उसे लगा दूँ, तो इसमें कोई हानि नहीं है। शीघ्र ही जो रुपया कमाऊँगा उसमेंसे दे दूँगा। ऐसी छोटीसी रकमका अदा कर देना कोई कठिन बात नहीं। अन्तमें एक दिन उससे नहीं रहा जाता और वह बेंकके रुपयोंको भी जो उसके अधिकारमें हैं लगा देता है और खो बैठता है। ऐसी घटनायें प्रतिदिन ही देखने और सुननेमें आती हैं। इनका कारण क्या है? दूसरेके रुपयेको अपने उपयोगमें लानेका वही एक बुरा विचार। यदि कोई बुद्धिमान होता तो मनमें आते ही उस विचारको निकाल देता और अपनी बुरी इच्छाको दबा लेता, परन्तु वह मूर्ख था। उसने उसे स्थान दिया। जितना जितना वह उसे स्थान देगा उतना उतना ही वह विचार बढ़ता जायगा और अन्तमें इतना जोरदार हो जायगा कि फिर कार्यरूपमें ही परिणत होता दिखलाई देगा और उसका परिणाम घृणा, अपमान, शोक और पश्चात्ताप होगा। शुरूमें ही जब मनमें कोई विचार उठता है तब उसका हटा देना आसान होता है। बादमें उसका ज़ोर बढ़ता जाता है और उसका हटाना उत्तरोत्तर कठिन होता जाता है। दियासलाई कितनी छोटी चीज़ है। शुरूमें उसके बुझानेके लिए केवल एक फूँक काफ़ी है; परन्तु यदि वह किसी चीज़में लग जाय, तो घरभरमें आग लगा देगी और फिर उसका बुझाना कठिन हो जायगा।

एक और उदाहरण लीजिए। इससे यह मालूम होगा कि किस तरह किसी चीज़की आदत पड़ जाती है और किस तरह वही आदत छूट जाती है। मान लो कि एक नवयुवक है। चाहे उसके मातापिता

धनवान् हो चाहे निर्धन, इससे कुछ मतलब नहीं। चाहे वह उच्च जातिका हो, चाहे नीच जातिका, इससे भी कुछ गरज नहीं। हाँ, इतना जरूर है कि वह एक नेक सदाचारी लड़का है। एक दिन वह अपने मित्रोंके साथ सन्ध्याके समय सैर कर रहा है। उसके मित्र भी वैसे ही साधारण स्थितिके सभ्य सदाचारी लड़के हैं, परन्तु प्रायः साधारण लड़कोंके समान वे भी कभी कभी भूल कर बैठते हैं। ऐसा ही उस दिन भी हुआ। उनमेंसे एकने कह दिया कि चलो, आज किसी जगह चलकर साथ साथ खावें। इसमें कुछ भी कठिनाई नहीं हुई; सब हँसते खेलते उस स्थान पर पहुँच गये। वहाँ उनमेंसे एक लड़का बोला कि "भाई, कुछ पीनेको भी चाहिए। उसके बिना कुछ आनन्द न आयगा।" अब हमारा नवयुवक उस समय इंकार करना सभ्यताके प्रतिकूल और मित्रताके नियमोंके विरुद्ध समझकर हाँमें हाँ मिला देता है। विवेक अदरसे रोकता है और पुकार कर कहता है कि सावधान हो, देख, क्या करता है! परन्तु वह इस समय कुछ नहीं सुनता। उसको इस बातका विचार नहीं है कि चरित्रकी दृढ़ता सदा सच्चे मार्ग पर जमे रहनेमें है। वह मित्रोंके साथ उस दिन थोड़ी शराब पी लेता है। यद्यपि वह इस विचारसे नहीं पीता कि उसको शराबसे प्रेम है या वह शराबकी आदत डालना चाहता है, सिर्फ यह खयाल करके पी लेता है कि मित्रोंमें इंकार करना ठीक नहीं है। दैवयोगसे दो चार बार ऐसा ही मौका पड़ जाता है और वह हर बार थोड़ी थोड़ी पी लेता है। परन्तु इसका परिणाम बहुत ही बुरा होता है। प्रत्येक बार विवेककी रोकटोक कम होती जाती है और धीरे धीरे उसे नशेकी चाट पड़ती जाती है। अब तो वह कभी कभी स्वयं भी खरीद कर थोड़ीसी पी लेता है। उसको स्वप्नमें भी इस

बातका खयाल नहीं होता कि मैं क्या कर रहा हूँ और इसका क्या भयंकर परिणाम होगा। धीरे धीरे उसको शराबकी आदत पड़ जाती है और अब उसके लिए उसका छोड़ना कठिन हो जाता है। इस पर भी वह कुछ परवा नहीं करता; वह समझता है कि मैं अपनी इच्छासे ही कभी कभी पी लेता हूँ। जब देखूँगा कि इसकी आदत ही पड़ गई, तब छोड़ दूँगा; परन्तु यह केवल उसका विचार ही है। उसके लिए शराब दिन दिन ज़रूरी होती जाती है और एक दिन वह आता है कि जब हम उसे पक्का शराबी देखते हैं। अब उसे स्वयं अपनी हालत पर शोक और पश्चात्ताप होता है। लज्जा, घृणा, अपमान और निर्धनताके कारण उसे अपने पिछले दिनोंकी याद आती है। परन्तु अब उसका जीवन बिलकुल नीरस और निराश हो गया है। यह उसके लिए आसान था कि वह शराबको कभी पीता ही नहीं, या पीता भी तो इस अवस्थाको पहुँचनेसे पहले ही उसका त्याग कर देता। परन्तु वर्तमान अवस्थामें भी चाहे यह कितनी ही गिरी हुई हो, कितनी ही बुरी हो, वह चाहे तो इसका त्याग कर सकता है और फिर एक बार पहलेके समान सुख और शांतिको प्राप्त कर सकता है। आप पूछेंगे कि इसका उपाय क्या है? उपाय यह है कि जब उसके मनमें शराब पीनेकी इच्छा हो, तत्काल उस इच्छाको रोक दे-एक मिनिटकी देर न करे। यदि ज़रा भी देर करेगा—ज़रा भी उस इच्छाको अपने मनमें स्थान देगा, तो फिर उसका निकलना कठिन हो जायगा। चिनगारीका पहले ही बुझा देना आसान है। जब घरमें आग लग जाती है तब उसका बुझाना कठिन हो जाता है। अतएव बुरे विचारको मनमें आते ही रोक दो। इसीमें सारी सफलता है।

यहाँ एक बात, और कह देनी ज़रूरी है कि कोई विचार केवल उस विचारको दूर करनेका ही विचार करनेसे दूर नहीं होता;

इसके दूर करनेका सरल और निश्चित उपाय यह है कि मनको किसी और कार्यमें लगाया जाय अथवा मनमें उस विचारका कोई प्रतिकूल या अन्य कोई उत्तम विचार भर दिया जाय। ऐसा करनेसे बुरा विचार स्वयमेव मनसे निकल जायगा और उत्तम विचार उसका स्थान ले लेगा। पहले पहल किसी विचारको निकालनेके लिए तबियत पर दबाव डालना होगा, परन्तु ज्यों ज्यों उसके लिए उद्योग किया जायगा त्यों त्यों उसमें कठिनाई कम और आसानी अधिक होती जायगी। और इसके विपरीत उत्तम विचारोंको मनमें स्थान देनेकी शक्ति बढ़ती जायगी। परिणाम यह होगा कि धीरे धीरे शराब पीने अथवा और किसी बुरे कामके करनेका विचार कम होता जायगा और यदि कभी ऐसा विचार आयगा भी, तो वह आसानीसे निकाल दिया जा सकेगा और एक दिन वह आयगा कि जब उस विचारका मनमें प्रवेश ही न होने पायगा। एक उदाहरण और भी दिया जाता है। मान लो कि एक आदमीका स्वभाव ज़रा चिड़चिड़ा है अर्थात् उसे जल्दी गुस्सा आजाता है। यदि कोई उसे कुछ कह देता है अथवा उसकी इच्छाके विरुद्ध कोई काम कर देता है तो वह बिगड़ खड़ा होता है और नाराज भी होने लगता है। अब इस दशामें वह जितना अधिक बुरा मानेगा और जितना अधिक अपने क्रोधको ज़ाहिर करेगा उतना ही अधिक उसका क्रोध बढ़ता जायगा। ज़रा ज़रा सी बात पर उसे क्रोध आने लगेगा और उसके लिए क्रोधका त्याग करना दिन दिन कठिन होने लगेगा; यहाँ तक कि क्रोध, घृणा, शत्रुता और बदला लेनेकी इच्छा उसके स्वभाव हो जायँगे। प्र... और प्रफुल्लता सदाके लिए विदा ले जायगी और हर एकके साथ का चिड़चिड़ानेका व्यवहार हो जायगा। परन्तु यदि वह

उसके मनमें उस कार्यके करनेका विचार पैदा हुआ है। अतएव यह बात बिलकुल स्पष्ट है कि हमारे विचारोंसे ही हमारा चरित्र बनता है। विचार ही मूल कारण है।

विचारोंसे ही हम अभीष्ट को प्राप्त कर सकते है और विचारोंसे ऊँचेसे ऊँचे पद पर पहुँच सकते हैं। केवल दो बातें ज़रूरी हैं। एक यह कि मनुष्यको अपना उद्देश और मनोरथ निश्चित कर लेना चाहिए। दूसरी यह कि सदा उनकी प्राप्तिके उद्योग करते रहना चाहिए। चाहे उसमें कितनी ही कठिनाईयाँ सहनी पड़ें और कितनी ही आपत्तियोंका सामना करना पड़े। स्मरण रक्खो कि स्थिर प्रकृति और दृढ चरित्र मनुष्य वही है जो अपने मनोरथकी सिद्धिमें भावी लाभके लिए वर्तमान सुखकी परवा नहीं करता। सदा उसको तिलांजुलि देनेको तैयार रहता है। वह कठिनाईयाँ दूर करता हुआ और आपत्तियोंको सहता हुआ अपने उद्देशकी प्राप्तिमें लवलीन रहता है और एक दिन अवश्य सफलताको प्राप्त कर लेता है। उसकी मनोकामना पूरी होजाती है और वह इच्छातीत होजाता है।

हमारा जीवन केवल क्षणिक सुखोंके लिए नहीं है। हमारे जीवनका उद्देश्य केवल सांसारिक या शारीरिक, सुखोंको प्राप्त करना नहीं है, किन्तु हमारा जीवन उच्चतम उद्देश्योंकी पूर्ति करने, श्रेष्ठतम चरित्रकी प्राप्ति करने और मनुष्यजातिकी सर्वोत्तम सेवा करनेके लिए है। इसमें ही हमको सबसे अधिक आनन्द मिलेगा। क्योंकि वास्तवमें सच्चा आनन्द इसीमें है। जो कोई इस आनन्दको और किसी रीतिसे प्राप्त करना चाहता है अथवा इसके लिए और किसी उपायका अवलम्बन करना चाहता है, वह कदापि सफलता प्राप्त नहीं कर सकता, अर्थात् उसको सच्चा स्थायी आनन्द कभी नहीं मिल सकता।

क्रोध आवे उसी समय उसे दबा दे और अपने मनको किसी और विषयकी तरफ़ लगा दे तो उसे प्रथम तो क्रोध आ ही नहीं सकता और यदि आयगा भी, तो शीघ्र ठंडा पड़ जायगा। यदि फिर कभी क्रोध आयगा और वह उसे शांत करनेका प्रयत्न करेगा तो उसको पहलेसे ज्यादह आसानी होगी। इस तरह थोड़े दिनोंमें ही उसका क्रोध छूट जायगा। तब न कोई बात उसे भड़का सकेगी और न किसी भी बातसे उसे क्रोध आयगा। इसके विपरीत उसकी तबियतमें क्षमा, शांति, दया और प्रेम पैदा हो जायँगे जिनका आज वह विचार भी नहीं कर सकता।

इसी प्रकार उदाहरण पर उदाहरण लिये जाओ। एक एक आदत, एक एक स्वभावको देखो। हर जगह इसी उपायको उपयोगी पाओगे। दूसरोंकी बुराई करना, उनके अवगुण देखना, ईर्ष्या, द्वेष, निर्दयता, कायरता, और इनसे उलटी तमाम आदतें इसी तरह विचारोंसे पैदा होती हैं। इसी तरह हमारे मनमें राग, द्वेष पैदा होता है। इसी प्रकार हमारी तबियतमें हर्ष, विषाद, शोक, आनन्द या खेद पैदा होता है। ऐसे ही हम स्वयं अपने तथा दूसरोंके लिए आशा और प्रसन्नताके स्रोत हो सकते हैं और ऐसे ही उनके लिए निराशा और दुःखके कारण बन सकते हैं।

मनुष्यके जीवनमें इससे ज्यादह सच्ची और कोई बात नहीं है कि हम जैसे बननेका विचार करते हैं वैसे ही बन जाते हैं। यह बात बिलकुल सच है और इसकी सचाईमें तनिक भी सन्देह नहीं है कि आदमी जैसा विचार करता है, वैसा ही बन जाता है। उसका चरित्र आदतोंका समूह है। उसकी आदते उसके कार्योंसे बनी हैं। और उसका प्रत्येक कार्य विचारपूर्वक है, अर्थात् प्रत्येक कार्यके पूर्वमें

उसके मनमें उस कार्यके करनेका विचार पैदा हुआ है। अतएव यह बात बिलकुल स्पष्ट है कि हमारे विचारोंसे ही हमारा चारित्र बनता है। विचार ही मूल कारण है।

विचारोंसे ही हम अभीष्ट को प्राप्त कर सकते हैं और विचारोंसे ऊँचेसे ऊँचे पद पर पहुँच सकते हैं। केवल दो बातें ज़रूरी हैं। एक यह कि मनुष्यको अपना उद्देश और मनोरथ निश्चित कर लेना चाहिए। दूसरी यह कि सदा उनकी प्राप्तिके उद्योग करते रहना चाहिए। चाहे उसमें कितनी ही कठिनाईयाँ सहनी पड़ें और कितनी ही आपत्तियोंका सामना करना पड़े। स्मरण रक्खो कि स्थिर प्रकृति और दृढ चरित्र मनुष्य वही है जो अपने मनोरथकी सिद्धिमें भावी लाभके लिए वर्तमान सुखकी परवा नहीं करता। सदा उसको तिलांजुलि देनेको तैयार रहता है। वह कठिनाईयाँ दूर करता हुआ और आपत्तियोंको सहता हुआ अपने उद्देशकी प्राप्तिमें लवलीन रहता है और एक दिन अवश्य सफलताको प्राप्त कर लेता है। उसकी मनोकामना पूरी होजाती है और वह इच्छातीत होजाता है।

हमारा जीवन केवल क्षणिक सुखोंके लिए नहीं है। हमारे जीवनका उद्देश्य केवल सांसारिक या शारीरिक, सुखोंको प्राप्त करना नहीं है, किन्तु हमारा जीवन उच्चतम उद्देश्योंकी पूर्ति करने, श्रेष्ठतम चरित्रकी प्राप्ति करने और मनुष्यजातिकी सर्वोत्तम सेवा करनेके लिए है। इसमें ही हमको सबसे अधिक आनन्द मिलेगा। क्योंकि वास्तवमें सच्चा आनन्द इसीमें है। जो कोई इस आनन्दको और किसी रीतिसे प्राप्त करना चाहता है अथवा इसके लिए और किसी उपायका अवलम्बन करना चाहता है, वह कदापि सफलता प्राप्त नहीं कर सकता, अर्थात् उसको सच्चा स्थायी आनन्द कभी नहीं मिल सकता।

सर्वोत्तम और उपयोगी ही समझूँगा कि यद्यपि मैं इस समय यह नहीं जानता कि यह अवस्था क्यों है, इससे क्या लाभ है और इसका क्या परिणाम होगा। परन्तु एक समय आयगा जब मैं इसके रहस्यको जान सकूँगा और उस समय ईश्वरको धन्यवाद दिये बिना न रह सकूँगा। इसमें सन्देह नहीं कि जिस समय कोई घटना होती है उसी समय उसके लाभको समझना कठिन होता है और बादमें भी उसका भेद समझना आसान नहीं होता, परन्तु जहाँतक बुद्धिमानों और दूरदर्शियोंने अवलोकन किया है जो घटनायें आज सर्वथा विपरीत और प्रतिकूल मालूम होती हैं उनका फल भी एक न एक दिन अच्छा ही हुआ है। गरज यह कि मनुष्यके जीवनमें ऐसी कोई क्रिया नहीं होती जो उसके लिए उपयोगी न हो और कोई बात ऐसी नही होती जो निरर्थक हो।

प्रायः हरएक आदमी अपनी हालतको, अपनी तकलीफको, सबसे ज्यादह खराब समझता है। प्रत्येक मनुष्य यही समझता है कि संसारमें मेरे समान कोई दुखी नहीं; मैं सबसे दुखी हूँ। जो आपत्ति मुझे सहनी पड़ती है, वह शायद ही किसीको सहनी पड़ी हो। उसको इस बातका खयाल नहीं रहता कि हरएक आदमी अपनी अपनी तकलीफोंमें फँसा हुआ है। किसीको कोई तकलीफ है, किसीको कोई रंज है, किसीको कोई कष्ट है, किसीको कोई दुःख है। मेरी हालत भी उन जैसी ही है। जो दुःख मुझे उठाने पड़े हैं और जिनको मैं बहुत ही भारी समझता हूँ, वे ही दुःख मेरे सैकड़ों भाईयोंको उठाने पड़े हैं। बस, हम इसी बातके समझनेमें भूल करते हैं। हम अपने दुःखोंको दुःख समझते हैं। उन्हींका हम अनुभव करते हैं। दूसरोंके दुःखोंको देखते तक भी नहीं। इसी कारणसे हम अपने दुःखोंको उनके दुःखोंकी अपेक्षा अधिक समझते हैं। परन्तु असल बात यह है कि प्रत्येक

प्रश्न यह नहीं है कि हमारे जीवनकी क्या दशा है? कैसी अवस्थ
है? किन्तु यह है कि हम उस दशाका—उस अवस्थाका कैसे और क्योंक
सामना करते हैं? चाहे हमारे जीवनकी कैसी ही दशा हो, चाहे व
सर्वथा हमारे प्रतिकूल हो, परन्तु हमें कदापि उसकी शिकायत नह
करना चाहिए। शिकायतसे कुछ काम नहीं चलता। शिकायतसे
उल्टा विषाद और उद्वेग पैदा होता है। विषादसे वह शक्ति जिस
हमारे जीवनमें एक नये प्रकारका जीवन पैदा होता है दुर्बल हो जात
है और सम्भव है कि वह सर्वथा नष्ट भी हो जावे। अतएव यदि
हमारी अवस्था हमारे प्रतिकूल हो तो हमें चाहिए कि हम उसे अपने
अनुकूल बना लेवें और यदि हम उसे अपने अनुकूल नहीं बना सकें
तो हमें स्वयं उसके अनुकूल हो जाना चाहिए। ऐसा करनेसे हमको
कोई आपत्ति नहीं सता सकती और कोई घटना दुखी नहीं कर सकती

प्रत्येक मनुष्यके जीवनमें ऐसी घटनायें नित्य होती रहती हैं जिनको
वह अपने लिए बहुत ही बुरी समझता है। स्वयं मूलग्रन्थकर्त्ता महा-
शय लिखते हैं कि "मेरे जीवनमें समय समय पर ऐसी अनेक घटनायें
हुईं जिनको मैं बहुत ही बुरी समझता था, जिनसे मुझे कभी कभी
लज्जित और अपमानित भी होना पड़ा और पीड़ा-वेदनायें भी सहनी
पड़ीं। परन्तु अब मुझे उनका लाभ मालूम होता है। अब मैं उनका
अर्थ और उपयोग समझता हूँ। अब मैं उनको लाखों रुपयेके बदले-
में भी भूलना पसन्द नहीं करता। उनसे मुझे एक बड़ी भारी शिक्षा
मिली है और वह यह है कि चाहे आज मेरी कैसी ही दशा हो,
चाहे कैसे ही दुःखकी अवस्था हो और भविष्यत्‌में भी चाहे कैसी ही
स्थिति हो; परन्तु मैं उसका सहर्ष स्वागत करूँगा और तनिक भी
शोक या विषाद न करूँगा। मैं उसको यह विचार करके अपने लिए

सर्वोत्तम और उपयोगी ही समझूंगा कि यद्यपि मैं इस समय यह नहीं जानता कि यह अवस्था क्यों है, इससे क्या लाभ है और इसका क्या परिणाम होगा। परन्तु एक समय आयगा जब मैं इसके रहस्यको जान सकूँगा और उस समय ईश्वरको धन्यवाद दिये बिना न रह सकूँगा। इसमें सन्देह नहीं कि जिस समय कोई घटना होती है उसी समय उसके लाभको समझना कठिन होता है और बादमें भी उसका भेद समझना आसान नहीं होता, परन्तु जहाँतक बुद्धिमानों और दूरदर्शियोंने अवलोकन किया है जो घटनायें आज सर्वथा विपरीत और प्रतिकूल मालूम होती हैं उनका फल भी एक न एक दिन अच्छा ही हुआ है। गरज यह कि मनुष्यके जीवनमें ऐसी कोई क्रिया नहीं होती जो उसके लिए उपयोगी न हो और कोई बात ऐसी नहीं होती जो निरर्थक हो।

प्रायः हरएक आदमी अपनी हालतको, अपनी तकलीफको, सबसे ज्यादह खराब समझता है। प्रत्येक मनुष्य यही समझता है कि संसारमें मेरे समान कोई दुखी नहीं; मैं सबसे दुखी हूँ। जो आपत्ति मुझे सहनी पड़ती है, वह शायद ही किसीको सहनी पड़ी हो। उसको इस बातका खयाल नहीं रहता कि हरएक आदमी अपनी अपनी तकलीफोंमें फँसा हुआ है। किसीको कोई तकलीफ है, किसीको कोई रंज है, किसीको कोई कष्ट है, किसीको कोई दुःख है। मेरी हालत भी उन जैसी ही है। जो दुःख मुझे उठाने पड़े हैं और जिनको मैं बहुत ही भारी समझता हूँ, वे ही दुःख मेरे सैकड़ों भाईयोंको उठाने पड़े हैं। बस, हम इसी बातके समझनेमें भूल करते हैं। हम अपने दुःखोंको दुःख समझते हैं। उन्हींका हम अनुभव करते हैं। दूसरोंके दुःखोंको देखते तक भी नहीं। इसी कारणसे हम अपने दुःखोंको उनके दुःखोंकी अपेक्षा अधिक समझते हैं। परन्तु असल बात यह है कि प्रत्येक

मनुष्यकी अवस्था भिन्न भिन्न है। अतएव प्रत्येक मनुष्यका चरित्र और व्यवहार भी भिन्न भिन्न होना आवश्यक है। प्रत्येक मनुष्यको स्वयं विचार करना चाहिए कि किन कारणोंसे मेरी दशा ऐसी ख़राब है और मैं ऐसी हीनावस्थामें हूँ। फिर उन कारणोंको दूर करने और उस शक्तिके बढ़ानेका उद्योग करना चाहिए जिससे अपनी दशा सुधरे और सुख प्राप्त हो। यह कार्य प्रत्येक मनुष्यको स्वयं करना चाहिए। इसमें दूसरेका कोई काम नहीं। हाँ, इतना हम अवश्य कर सकते हैं कि एक दूसरेको उन उपायों और नियमोंका ज्ञान करा सकते हैं जो इस कार्यमें उपयोगी हैं—जिनसे यह काम बड़ी आसानीसे हो सकता है। नियमोंका पालन करना प्रत्येक मनुष्यका काम है। जब वह स्वयं उन नियमोंका पालन करेगा तब ही उसे लाभ होगा। वैद्यका काम ओषधि बता देनेका है। ओषधि सेवन करना रोगीका काम है।

यदि हम अपने आपको किसी हालतमेंसे—जिसमें हम जानते बूझते या भूल कर, इरादा करके या बिना इरादेके फँस गये हैं—निकालना चाहते हैं तो इसका सबसे अच्छा उपाय यह है कि हम उन कारणों पर विचार करें जिनसे ऐसी हालत हो गई है और फिर उस प्राकृतिक नियमको माळूम करें जिस पर उसका आधार है। जब यह नियम माळूम हो जाय तब हमको उसका विरोध या प्रतिकूलता नहीं करनी चाहिए, किन्तु उसके अनुकूल या सहकारी रहना चाहिए। यदि हम उसके अनुकूल कार्य करेंगे तो वह हमारे लिए बड़ा उपयोगी और लाभदायक होगा और हमको हमारे अभीष्ट मनोरथ तक पहुँचा देगा; परन्तु यदि हम उसका विरोध करेंगे अथवा उसके अनुकूल न चलेंगे तो इसका परिणाम हमारे लिए बड़ा हानि-

कर होगा। वह हमारा सर्वनाश किये बिना न छोड़ेगा। प्राकृतिक नियम अटल है। वह अपनी चाल नहीं बदल सकता और हमारे विरोध या प्रतिकूलतासे रुक नहीं सकता। भावार्थ यह है कि यदि उसके अनुकूल चलोगे तो तुम्हारी सम्पूर्ण इच्छायें पूर्ण हो जायँगी, परन्तु यदि उसके प्रतिकूल रहोगे तो याद रक्खो, हानि और दुःख उठाओगे।

कुछ दिन हुए मैं एक औरतसे मिला। उसके पास पाँच छह एकड़ जमीन थी। उसके पतिका कुछ वर्ष पहले देहान्त हो गया था। यद्यपि वह बड़ा नेक और मेहनती आदमी था, परन्तु उसमें एक बड़ा भारी अवगुण था। वह जो कुछ कमाता था सब शराबमें उड़ा देता था। जब वह मरा तब उसकी औरतके पास उस पाँच छह एकड़ जमीनका कर देनेको रुपया न था। उसको किसी प्रकारका भी कहींसे सहारा न था और निजका तथा पाँच छह बच्चोंका बोझ उसके सिर पर था; परन्तु ऐसी दशामें भी उसने साहस और धैर्यको नहीं छोड़ा। वह तनिक भी निराश न हुई। उसने वीरता और दृढ़तासे आपत्तियोंका सामना किया और इस बातका दृढ़निश्चय रक्खा कि ऐसे अनेक उपाय हैं, —यद्यपि वे मुझे इस समय स्पष्टतया दृष्टिगोचर नहीं होते हैं—जिनसे मैं इन दुःखोंसे मुक्त हो सकती हूँ। उसने शीघ्र ही अपने टूटे फूटे सामानको ठीक किया और एक बोर्डिंग हाउसमें काम करना शुरू किया। वह कहती थी कि मैं ४ बजे उठती हूँ और रातको १० बजे तक काम करती रहती हूँ। जाड़ेके दिनोंमें जब लड़के चले जाते हैं तब आसपासके ग्रामोंमें दाईका काम करती हूँ। इस प्रकार अब वह अपनी जमीनका कर भी देती है और उसके बच्चे स्कूलमें भी पढ़ते हैं। अब वे बच्चे बड़े हो गये हैं और कुछ न कुछ अपनी

माताको सहायता भी पहुँचाते हैं। यह उस औरतने स्वयं अपने पुरुषार्थसे किया है। वह कदापि निराश या हतोत्साह नहीं हुई और उसने कभी भय या अरुचिको अपने हृदयमें स्थान नहीं दिया। न उसने कभी भाग्यको उलाहना दिया और न कभी साहसको त्यागा; जो कुछ सामने आया सदा हर्षपूर्वक उसे सहन किया और जो कुछ मिला उसी पर संतोष किया। वह कहती थी कि "मुझे इस बातसे बड़ा हर्ष है कि मैं सदा कार्यतत्पर रही, और मेरी दशा चाहे कितनी ही गिरी हुई हो, चाहे कितने ही दुःखमें हूँ, परन्तु मैं सदा ऐसे स्त्री पुरुषोंको देखती रही हूँ जिनकी दशा मुझसे भी गिरी हुई है और जिनकी मैं कुछ न कुछ सहायता कर सकती हूँ। मुझे इससे बहुत सन्तोष होता है और मैं समझती हूँ कि संसारमें मैं ही सबसे अधिक दुःखी नहीं हूँ परन्तु मुझसे भी अधिक दुःखी मौजूद हैं। मैं तो अब एक तरहसे सुखी हूँ। अब मुझे अपनी जमीनके कर चुकानेकी चिन्ता नहीं रही।" वास्तवमें अब वह औरत सुखी है। चरित्रकी दृढता, स्वभावकी नम्रता, दूसरोंके प्रति प्रेम और मित्रता तथा सत्यकी सदा जय होती है। इस बातकी सम्यक् श्रद्धा और गुणोंके कारण वह स्त्री हज़ारों स्त्रीपुरुषोंसे श्रेष्ठ है जो बाह्यमें उससे अच्छी दशामें मालूम होते हैं। अब वे बातें जो बहुतोंका जी तोड़ देनेके लिए काफ़ी थीं उस स्त्रीके उद्योगसे उसके अनुकूल हो कर उसके लिए उपयोगी हो गई हैं।

विचार करो कि यदि यह स्त्री ऐसी बुद्धिमती और दूरदर्शिनी न होती तो क्या परिणाम होता। किस प्रकार वह आपत्तियोंको सहन करती और किस तरह कठिनाइयोंका सामना करती। शान्ति उसकी तबियतमेंसे जाती रहती, उत्साह उसका नष्ट हो जाता और भय

ो चिन्तामें वह सदैव ग्रसित रहती। अथवा वह उस ईश्वरीय ायम और प्राकृतिक सिद्धान्तके विरुद्ध चलती जिसके कारण उसकी ह दशा हुई; उसका जीवन बिल्कुल निरर्थक हो जाता और जिन नुष्योंसे उसका काम पड़ता वे सब उससे घृणा करने लगते। अथवा ह वह विचार करती कि मेरे उद्योग और पुरुषार्थसे कुछ काम न ोगा, किसी न किसीको अवश्य मेरी सहायता करनी चाहिए और स आपत्तिसे मुझे निकालना चाहिए। इस प्रकार कदापि उसकी च्छा पूर्ण न होती, उल्टी उसकी आपत्ति दिन दिन बढ़ती जाती और वह उत्तरोत्तर अधिक अधिक कष्टोंका अनुभव करने लगती। कारण कि वह सदा इसी बातका विचार करती—ये ही विचार उसके मनमें घूमते रहते। न वह जमीनको रख सकती और न कुछ दूसरोंका उपकार कर सकती। वह न केवल अपने लिए किन्तु संसार भरके लिए दुःख और घृणाका कारण हो जाती।

अतएव किस मनुष्यकी कैसी दशा है और वह किस हालतमें है, इससे कुछ प्रयोजन नहीं है। प्रयोजन इससे है कि वह उस दशामें किस तरह रहता है। यदि वह दुःखमें है तो उस दुःखको किस तरह सहन करता है। यदि आपत्तिमें है तो किस तरह उस आपत्तिका सामना करता है। बस, इसीसे सब बातोंका पता लग जायगा। यदि हमको किसी समय अपनी दशा सबसे गिरी हुई और असह्य मालूम हो तो हमको उनकी दशाका विचार करना चाहिए जिनकी दशा हमसे भी गिरी हुई है। जो हमसे धनमें, बड़प्पन—सब चीजोंमें कम हैं, ऐसे मनुष्योंका संसारमें अभाव नहीं। एकसे एक ऊँचा और एकसे एक नीचा है। जहाँ दृष्टि पसार कर देखोगे वहीं मिलेंगे। इस विचारसे हमको कुछ शान्ति होगी और हमारा बोझ कुछ कम हो जायगा।

कहते हैं कि जब सिकन्दर बादशाह मरा तब उसकी माताको बहुत ही दुःख हुआ और किसी तरह भी उसका दुःख कम न हुआ। अन्तमें एक वैद्यने उससे कहा कि माता, मैं तेरे पुत्रको जीवित कर सकता हूँ यदि तू एक काम करे। माताने कहा, क्या? मैं पुत्रके लिए अपनी जान तक भी देनेको तैयार हूँ। वैद्यराजने कहा—माता, तू स्वयं जाकर एक कटोराभर पानी मुझे उस घरसे ला दे जिसमें पहले कोई मरा न हो। वृद्ध माता घर घर फिरी, परन्तु उसे कोई भी घर ऐसा न मिला जहाँ पहले कोई न मरा हो। बस, अब उसे धैर्य हो गया। अब वह भलीभाँति जान गई कि इस दुःखसे केवल मैं ही दुखी नहीं हूँ; किन्तु संसारके सभी मनुष्य दुखी हैं। मैं एक पुत्रके लिए रोती हूँ; औरोंके तो कई कई पुत्र मर गये हैं। इसी तरह और बातोंमें भी जब हम अपनेसे अधिक दुखी मनुष्योंको देखते हैं तब हमको कुछ शान्ति हो जाती है, उनसे सहानुभूति और अपनी दशा पर संतोष होने लगता है।

हमारे प्रत्येक कार्यकी उन्नति या अवनति, सफलता या असफलता विचार पर निर्भर है। जिस प्रकारके हम विचार करते हैं, उसी प्रकारके हमारे कार्य होते हैं। विचारोंमें महान् बल है। वे अपने समान कार्य पैदा करनेकी शक्ति रखते हैं। चाहे हमको उनका ज्ञान हो या न हो। मनकी आकर्षण शक्तिका सिद्धान्त कि 'सजातीय सजातीयको उत्पन्न करता है और समान समानको अपनी ओर खींचता है,' एक महान् विश्वव्यापी सिद्धान्त है, जो हमारे जीवनके प्रत्येक समयमें अपना काम किये जाता है। अतएव जो मनुष्य अपना उद्देश्य स्थिर करके उसकी ओर दृढतासे बढ़ता है, जो अपने उद्देश्यको सदा हृदयंगत रखता हुआ किसी प्रकारके भय या संदेहको अपने मनमें

कभी स्थान नहीं देता और जो अपने सांसारिक कार्योंमें बिना किसी प्रकारकी शिकायतके अपने उद्देश्यकी पूर्तिमें तत्पर रहता है और सदा उसके लिए उद्योग किये जाता है, वह एक न दिन अवश्य अपने अभीष्टको प्राप्त कर लेता है।

कुछ मनुष्य ऐसे हैं कि जब वे विचारशक्ति (मनोबल) के इस सिद्धान्तको समझने लगते हैं और जब उनको यह ज्ञान होने लगता है कि हम अपनी आन्तरिक आत्मिक और मानसिक शक्तियोंके बलसे अपने जीवनकी दशाको इच्छानुकूल बदल सकते हैं, तब वे अपने जोशके प्रारम्भमें ही यह समझने लगते हैं, कि बस, इधर विचार किया उधर स्वभाव बदल गया और एक नये साँचेमें ढल गया। परन्तु यह काम कोई खेल तो है नहीं कि इधर कल ऐंठी और उधर आराम होने लगी। शुरूमें जल्दी फल प्रगट नहीं होता। इससे उनकी आशायें मिटने लगती हैं। वे हतोत्साह हो जाते हैं और समझने लगते हैं कि यह सिद्धान्त ही कुछ कार्यकारी नहीं है; परन्तु यह उनकी भूल है। उनको स्मरण रखना चाहिए कि पुरानी आदतोंका छोड़ना और नई आदतोंका ग्रहण करना कुछ आसान नहीं है। ऐसे कामोंके लिए बहुत समयकी जरूरत है।

जैसा हम पहले कह आये हैं, जितना जितना हम किसी कामका विचार करेंगे—ज्यों ज्यों हम उसके लिए उद्योग करेंगे त्यों त्यों वह काम आसान होता जायगा। पहले पहल काम ज्यादह होता नहीं दिखाई देता, परन्तु धीरे धीरे बार बारके अभ्याससे उस कामके करने-की शक्ति बढ़ती जाती है। सिद्धान्त यही है कि जितना जितना अभ्यास किया जायगा उतनी ही शक्ति बढ़ती जायगी। यही सिद्धान्त हमारे जीवन तथा संसारके समस्त कार्योंमें कार्यकारी है।

लिए अर्पण है। इसका कारण क्या है? यह कि प्रत्येक मनुष्यके जीवनमें एक समय आता है (यद्यपि भिन्न भिन्न मनुष्योंमें यह भिन्न भिन्न होता है) जब कि उसकी जीवनपर्यंतकी मानसिक अवस्थायें, स्वभाव और गुण अपने आपको चारों ओरसे एक बिंदु पर एकत्रित करने लगते हैं और तदनन्तर प्रगट होने लगते हैं। प्रबल विचार अपनेको कार्योंके रूपमें प्रगट करके मनुष्यकी उन प्रकृतियोंको—जो पहले बड़ी निर्बल और अव्यक्त थीं—अकस्मात् प्रबल रूपमें प्रगट कर देते हैं जिससे एक नई रीतिका जीवन हो जाता है।

उदाहरणके लिए, मानों एक बगीचेमें एक सेबका वृक्ष है। वर्षों तक उसमें फल आते रहे। थोड़े दिन हुए कि उसमें कलम लगाई गई। इसके बाद वसंतऋतु आई और निकल भी गई। वृक्षके उस भागमें भी कलियाँ खिलीं जिसमें कलम लगाई गई थी और उस भागमें भी जिसमें कलम नहीं लगाई गई थी। दोनों भागोंमें कलियाँ एक सी ही थीं। साधारण मनुष्यको उनमें कोई भेद नहीं मालूम होता था। अन्तमें फूलोंके स्थानमें फल आये और सारा वृक्ष नन्हें नन्हें सेवोंसे लद गया। इन फलोंमें अब बहुत ही कम अंतर मालूम होता है—स्थूल दृष्टिसे देखनेमें तो कोई भेद ही नहीं जान पड़ता; परन्तु थोड़े ही दिनोंमें गुण, रूप, रस, गंध और वर्णमें इतना स्थूल अन्तर हो जायगा कि साधारणसे साधारण बुद्धिका मनुष्य भी पहचान सकेगा। एक तरफके फल छोटे छोटे कच्चे कुछ कुछ पीलेपनको लिये हुए हरे रंगके खट्टे होंगे; परन्तु दूसरी तरफके बड़े बड़े गहरे लाल रंगके, मीठे सुंदर और सुगंधित होंगे। पहले सेव दस पाँच रोज़हीमें झड़ जायँगे, परन्तु पिछले ऋतु भर रहेंगे और जब तक फिरसे कलियाँ न आयँगी उसी तरह फले-फूले रहेंगे।

प्राकृतिक बगीचेमें यह अंतर क्यों है? इसका कुछ कारण होना चाहिए! कारण यह कि एक समय तक यद्यपि शुरूसे ही वृक्षके दोनों भागोंके फलोंकी बनावटका सामान कुछ कुछ एक दूसरेसे भिन्न था, तथापि उनमें कोई भेद मालूम नहीं होता था। अंतमें एक समय आया कि जब उनके भिन्न भिन्न अंतरस्थ अव्यक्त गुण और स्वभाव ऐसी शीघ्रतासे व्यक्त होने लगे कि अन्धेसे अन्धा भी हाथमें लेकर उनकी पहचान करने लगा। यद्यपि साधारण मनुष्योंको शुरूमें यह भेद मालूम नहीं होता था, परन्तु बागके माळीको शुरूसे ही मालूम था। उसने पहलेसे ही वृक्षके दोनों भागोंके गुण स्वभाव जान लिये थे। उसने ठीक समय पर थोड़ासा बाह्य असर डाल कर उनके आभ्यन्तरिक गुणों और अवगुणोंको प्रगट कर दिया।

ठीक यही हाल मनुष्योंका भी है। इस लिए जो मनुष्य अपनी वृद्धावस्थाको आनन्दमय बनाना चाहते हैं, उनको युवावस्थामें ही इस ओर ध्यान देना चाहिए। उसी समयसे इसके लिए उन्हें उद्योग करना चाहिए। परन्तु जिन्होंने युवावस्थामें कुछ नहीं किया अथवा जो कुछ किया उसमें सफलता प्राप्त नहीं हुई, तो उन्हें उचित है कि अब उत्साहपूर्वक उद्योग करना शुरू कर दें। निराश न हों। कहावत है कि 'जब तक साँस है तब तक आस है।' जब तक जीवन है किसी वस्तुको सर्वथा खोई हुई न समझो। इसमें सन्देह नहीं कि जो मनुष्य अपने बुढ़ापेको विशेष रूपसे सुखी बनाना चाहता है उसको प्रारम्भसे ही उसके लिए तत्पर होना चाहिए। क्यों कि जितनी अवस्था बढ़ती जाती है उतनी ही आदतें प्रबल होती जाती हैं और फिर उनको छोड़ना और दूसरी आदतोंका ग्रहण करना कठिन हो जाता है।

भय, चिन्ता, खेद, अशान्ति, स्वार्थ, कृपणता, नीचता, संकीर्ण छिद्रान्वेषण, दूसरोंकी हँमें हाँ मिलाना और उनके कार्यां व विचारोंका दास होना, अपने सहधर्मियों और सहजातियोंके प्र प्रेम और मित्रताका न होना, उनके कार्यों और विचारोंसे सहानुभू न रखना, चरित्रगठनकी प्रवल शक्तियोंका ज्ञान न होना, तथा प ब्रह्म परमात्माके अनन्त दर्शन, अनन्त ज्ञान, अनन्त सुख, अन वीर्य, आदि गुणों पर श्रद्धा न होना, ये बातें जिन लोगोंमें जड़ पक जाती हैं, उनको बुढ़ापेमें निरानन्द और सविषाद बना देती हैं दूसरोंको क्या स्वयं उनको अपना स्वभाव बड़ा ही घृणित माल्म हो है; परन्तु इसके विपरीत जहाँ अच्छी आदतें पैदा हो जाती हैं वहाँ ईश्वरीय सहायता पाकर वृद्धावस्थाको ऐसा सुन्दर, मनोहर औ आनन्दमय बना देती हैं कि स्वयं उनको भी अपना जीवन उत्त और मनोहारी माल्म होता है और दूसरोंकी भी उनके प्रति प्रीति और सहानुभूति बढ़ती जाती है। ये दोनों अवस्थायें मनुष्यके केवल विचारों और कार्यों पर ही असर नहीं डालतीं किन्तु उसकी आकृतिको भी बदल देतीं हैं। उसका रूप रंग सब कुछ बदल जाता है।

यदि प्रत्येक मनुष्य अपने जीवनमें थोड़ासा तत्त्वज्ञान भी प्राप्त करे, तो बड़ा अच्छा हो। वृद्धावस्थामें इससे बड़ा लाभ होगा और आपत्तिके कठिन समयमें इससे बड़ी शान्ति मिलेगी। हम कभी कभी ऐसे तात्त्विकोंका हास्य किया करते हैं, परन्तु हमारे लिए उचित यही है कि हम भी उनका अनुकरण करें, अन्यथा ऐसा समय आयगा जब तत्त्वज्ञानके अभावसे हमको कष्ट उठाना पड़ेगा। यह सत्य है कि कभी कभी ऐसे मनुष्य रुपये पैसेके काममें अथवा सांसारिक उन्नतिमें

कुछ पीछे रह जाते हैं, परन्तु स्मरण रहे कि उनके पास यह अमूल्य रत्न है जिसका जीवनके वास्तविक उद्देश पर प्रभाव पड़ता है और जिसकी आवश्यकता कभी न कभी राजासे लेकर रंक तक प्रत्येक व्यक्तिको पड़ती है। वे लोग जो एक समय उसके न होनेसे किसी किसी बातमें उन्नति कर गये थे आज उसके न होनेसे इतने चिंतित हो रहे हैं कि अपनी सारी सम्पत्ति ही नहीं किन्तु सम्पूर्ण जगतका धन देकर भी उस वस्तुको प्राप्त नहीं कर सकते जिस पर वे एक समय हँसते थे।

हमको इन तमाम बातों पर विचार करके अपना केंद्र जल्द मालूम कर लेना चाहिए। यदि जल्द न हो सके तो देरमें ही सही; परन्तु मालूम अवश्य कर लेना चाहिए—चाहे देर, चाहे सबेर।

जब तक हम जीवित हैं तब तक एक अत्यन्त आवश्यक बात यह है कि हम सांसारिक कार्योंमें अपना पार्ट (हिस्सा) बड़ी धीरता और उत्तमतासे करते रहें और उसकी सदा बदलती रहनेवाली अवस्थाओंमें अपना प्रेम और उत्साह बराबर बनाये रक्खें, अर्थात अपने आपको इस संसारकी परिवर्तनशील घटनाओं और अवस्थाओंके अनुकूल रक्खें। नहरका पानी मीठा और साफ कब रहता है? जब वायु सदा उस पर चलती रहे और उसको बराबर चलाती रहे अथवा उसका पानी स्वयं, आगे बढ़ता रहे। अन्यथा थोड़े ही दिनोंमें पानी पर काई आ जायगी और उसमेंसे दुर्गंधि आने लगेगी। यदि हमारे मित्रसम्बन्धी हमसे प्रेम नहीं करते तो यह हमारा अपना दोष है। हमारे स्वभावमें ही कोई दूषण है। हमारा कर्तव्य है कि हम खोज करके देखें कि क्या दूषण है। फिर उसको दूर करनेका उद्योग करें। इसमें किसी अवस्था विशेषकी जरूरत नहीं है। युवा वृद्ध प्रत्येक

दूर कर सकता है और अपनेको दूसरोंका प्रिय पात्र बना सकता है। बूढ़े लोग प्रायः इसके समझनेमें भूल करते हैं। वे समझते हैं कि यह जवानोंका काम है कि हमारा आदर सत्कार करें और हमसे प्रेम और सहानुभूति रक्खें। हमको स्वयं ऐसा कुछ नहीं करना है। हमको जरूरत नहीं कि हम भी दूसरोंसे प्रेम और प्रीतिका व्यवहार रक्खें। यह केवल दूसरोंका काम है। आदर सत्कार करना तो सम्भव है परन्तु प्रेम और प्रीति एकतरफा नहीं हो सकती। चाहे बूढ़ा हो या जवान; ताली एक हाथसे नहीं बज सकती। बूढ़ोंका भी यह कर्तव्य है कि वे जवानोंकी अवस्था पर विचार करें और उनसे प्रेम करना सीखें। परस्परताका सिद्धान्त सब पर घटित होना चाहिए—चाहे बूढ़े हों चाहे जवान। यदि कोई इस सिद्धान्तकी अवज्ञा करेगा तो परिणाम यही होगा कि उसका सर्वनाश हो जायगा चाहे वह किसी ही अवस्थाका हो।

हमारा जीवन एक महान् लीला या नाटक है जिसमें हर्ष विषाद, शोक आह्लाद, धूप छाया, सर्दी गर्मी, सब मिले हुए हैं और हमको सबमें योग लेना होता है। हमारा कर्तव्य है कि हम हर एक बातको चाहे कुछ हो और कभी हो बड़ी वीरता और उत्तमतासे करें। कोई कारण नहीं कि कुछ तो प्रसन्नतासे करें और कुछ अप्रसन्नतासे, प्रत्येक दशामें समयके अनुकूल प्रवृत्ति करें; परन्तु हृदय पर इसका कोई असर न होने दें। हृदयमें सदैव अपने उद्देश्य पर दृष्टि रक्खें और संसारके बदलते हुए रंगोंसे उस पर कालिमा न लगने दें। जैसे एक 'स्टेज-एक्टर' या नाटकपात्रको इससे कुछ मतलब नहीं कि उसका पार्ट हर्षोत्पादक है या शोकप्रद, राजाका है या रंकका, छोटा है या बड़ा, अच्छा है या बुरा। इसी तरह हमको भी संसारकी घटनाओंमें चाहे वे अच्छी हों या बुरीं, समरूप रहना चाहिए। अच्छीसे

हर्ष न करें, और बुरीसे शोक न करें; किन्तु हर एक बातको समान भावसे करें। यदि हमको कोई उच्च पद मिल जाय तो उसका अभिमान न करें और यदि किसी नीच पद पर उतार दिये जायँ तो कोई विषाद न करें—प्रत्येक दशामें समभाव और समरूप रहें। इसके अतिरिक्त अच्छे खेलमें प्रवेश और निष्कृतिका भी विचार होता है। जीवनकी रंगभूमिमें प्रवेश तो प्रायः अपने अधिकारसे बाहर होता है; परन्तु रंगभूमिमें किस प्रकार अपना पार्ट करना चाहिए तथा वहाँसे किस तरह निकलना चाहिए यह हमारे हाथमें होता है और इस अधिकारको कोई व्यक्ति या कोई शक्ति हमसे छीन नहीं सकती। इसी पर हमारे कामकी अच्छाई बुराई निर्भर है और इसको हम जितना चाहें सुंदर और यशस्कर बना सकते हैं। हमारे जीवनकी वर्तमान स्थिति चाहे कितनी ही नीच और पतित क्यों न हो; परन्तु यदि हम अपना पार्ट अच्छी तरह उत्साहके साथ करें तो हमारा इस रंगभूमिसे बाहर निकलना अर्थात् हमारी मृत्यु बड़ी ही प्रशंसनीय और आदरणीय होगी।

मेरे खयालमें हम इस संसारमें इस लिए आये हैं, कि अपने अनुभवसे यह मालूम करें कि शुद्ध आत्मा क्या वस्तु है और इसकी क्या शक्ति है। आत्माकी वास्तविक शक्तिको जानना ही मानो परमात्माकी शक्तिको जानना है। यही हमारा अभीष्ट और यही हमारा उद्देश्य है। जितना हम अपने समयको आनन्दसे व्यय करते हैं और जीवनकी बदलती हुई अवस्थाओंमें समान भावसे प्रवृत्त होते हैं, उतना ही हम अपने उद्देश्य और मनोरथमें सफल होते हैं। अतएव हमको जीवनकी प्रत्येक अवस्थामें धीर वीर रहना चाहिए, चाहे यह अवस्था अच्छी हो चाहे बुरी, चाहे नीची हो चाहे ऊँची। जिन कामोंको

करनेकी हम शक्ति रखते हैं उनको यथासम्भव अच्छी तरह करना चाहिए और जो बातें हमारी शक्तिसे बाहर हैं उनमें व्यर्थ न पड़ना चाहिए। सर्वशक्तिमान ज्ञाता द्रष्टा परमात्मा इन बातोंको स्वयं ही देख रहा है अतएव हमें इनके विषयमें कोई भय या चिंता न करनी चाहिए और न कभी इनका विचार करना चाहिए।

जिन बातों और कार्योंसे हमारा सम्बन्ध है उनको सर्वोत्तम रीतिसे करना, अपने मार्गानुगामी बन्धुओंकी यथाशक्ति सहायता करना, दूसरोंकी त्रुटियों और कमियोंको दूर करके तथा उन्हें कुमार्गसे हटा करके सत्य मार्ग पर लाना जिससे वे पापमय जीवन व्यतीत करनेके स्थानमें संसारमें धार्मिक प्रशस्य जीवन व्यतीत करें, तथा अपने स्वभावको सदा सरल, शुद्ध और विनीत रखना जिससे ईश्वरीय शक्तिका विकाश हो सके, अपनेको सदा उत्तम कार्योंके लिए तैयार रखना, सबसे प्रेम और सहानभूति रखना, और किसीसे भी नहीं डरना, परन्तु पापसे सदा भयभीत रहना, समस्त पदार्थोंके उत्तम गुणोंको देखना और उनके प्रकाशकी आशा करना—इन सब बातोंसे जीवन बड़ा ही प्रशस्य और आनन्दमय होगा और फिर हमको किसी भी चीजसे डरनेकी जरूरत नहीं रहेगी न जीवनसे, न मृत्युसे। मृत्यु हमारे स्थायी जीवनका द्वार है। अर्थात् इस स्थूल पौद्गलिक शरीरके विनाशसे ही मोक्ष प्राप्त होता है जहाँ आत्मा शुद्धतम अवस्थाको प्राप्त करके अनन्त सुखका अनुभव करता है। फिर उसके बाद कोई बन्धन नहीं। न जन्म मरण है न दुःख व्याधि है। अतएव हमें मृत्युसे कदापि न डरना चाहिए, किन्तु सदैव मृत्युका हृदयसे स्वागत करना चाहिए और अपनेको मृत्युके लिए तैयार रखना चाहिए। परन्तु स्मरण रखना चाहिए कि हम ऐसा जीवन व्यतीत करें

के जिससे जन्म मरणका बन्धन एक बारगी टूट जाय। इसमें संदेह नहीं कि यह एक महान् कठिन कार्य है। इसके लिए अनेक प्रबल शत्रुओंसे युद्ध करना होगा। घोर परिषह सहनी होंगी, कठिन व्रत धारण करने होंगे, इंद्रियोंको दमन करना होगा, कषायोंको शमन करना होगा; परन्तु लाभ भी इससे अनन्त और अपार होगा।

इसमें तनिक भी संशय या विवाद नहीं है कि हमारे जीवनका सम्पूर्ण आचार व्यवहार हमारी आंतरिक दशा पर निर्भर है। जीवनका स्रोत ही हमारे अंतरगमें है। अतएव हमको अपनी आन्तरिक दशा पर अधिकतर विचार करना उचित है। हमको चाहिए कि प्रतिदिन थोड़ासा समय शान्तिके साथ एकान्तमें इस विषय पर विचार करनेके लिए नियुक्त करें। इस समय अपने चित्तको अशुभ योगसे रोक कर शान्त भाव धारणकर अपनी आत्माका किंचित् चिन्तवन करें। निश्चयसे यह हमारे लिए बड़ा ही उपयोगी और लाभदायक होगा। क्यों कि कई कारणोंसे इसकी आवश्यकता है। प्रथम तो इससे यह लाभ होगा कि हम अपने हृदय और अपने जीवनमें से बुराईके बीज निकाल सकेंगे। दूसरे यह लाभ होगा कि हम अपने जीवनके उद्देश्य उच्चतर बना सकेंगे। तीसरे यह लाभ होगा कि हम उन बातोंको स्पष्ट रूपसे देख सकेंगे जिन पर हम अपने विचारोंको जमाना चाहते हैं। चौथे यह लाभ होगा कि हम यह जान सकेंगे कि हमारे आत्मामें और परमात्मामें क्या भेद है और उनमें क्या संबन्ध है। अतएव उसकी भक्तिमें अधिक लीन हो सकेंगे। पाँचवें यह लाभ होगा कि हम अपने दैनिक सांसारिक वितंडोंमें यह याद रख सकेंगे कि यह सर्वशक्तिमान अनंत ज्ञान अनंत दर्शन संयुक्त परमात्मा जो जगद्गुरु है वही हमारे जीवनका मूल और हमारी सम्पूर्ण शक्तियोंका स्रोत है और उससे पृथक् न

करनेकी हम शक्ति रखते हैं उनको यथासम्भव अच्छी तरह करना चाहिए और जो बातें हमारी शक्तिसे बाहर हैं उनमें व्यर्थ न पड़ना चाहिए। सर्वशक्तिमान ज्ञाता द्रष्टा परमात्मा इन बातोंको स्वयं ही देख रहा है अतएव हमें इनके विषयमें कोई भय या चिंता न करनी चाहिए और न कभी इनका विचार करना चाहिए।

जिन बातों और कार्योंसे हमारा सम्बन्ध है उनको सर्वोत्तम रीतिसे करना, अपने मार्गानुगामी बन्धुओंकी यथाशक्ति सहायता करना, दूसरोंकी त्रुटियों और कमियोंको दूर करके तथा उन्हें कुमार्गसे हटा करके सत्य मार्ग पर लाना जिससे वे पापमय जीवन व्यतीत करनेके स्थानमें संसारमें धार्मिक प्रशस्य जीवन व्यतीत करें, तथा अपने स्वभावको सदा सरल, शुद्ध और विनीत रखना जिससे ईश्वरीय शक्तिका विकाश हो सके, अपनेको सदा उत्तम कार्योंके लिए तैयार रखना, सबसे प्रेम और सहानभूति रखना, और किसीसे भी नहीं डरना, परन्तु पापसे सदा भयभीत रहना, समस्त पदार्थोंके उत्तम गुणोंको देखना और उनके प्रकाशकी आशा करना—इन सब बातोंसे जीवन बड़ा ही प्रशस्य और आनन्दमय होगा और फिर हमको किसी

कि जिससे जन्म मरणका बन्धन एक बारगी टूट जाय। इसमें संदेह नहीं कि यह एक महान् कठिन कार्य है। इसके लिए अनेक प्रबल शत्रुओंसे युद्ध करना होगा। घोर परिषह सहनी होंगी, कठिन व्रत धारण करने होंगे, इंद्रियोंको दमन करना होगा, कषायोंको शमन करना होगा; परन्तु लाभ भी इससे अनन्त और अपार होगा।

इसमें तनिक भी संशय या विवाद नहीं है कि हमारे जीवनका म्पूर्ण आचार व्यवहार हमारी आंतरिक दशा पर निर्भर है। जीवनका गीत ही हमारे अंतरंगमें है। अतएव हमको अपनी आन्तरिक दशा र अधिकतर विचार करना उचित है। हमको चाहिए कि प्रतिदिन गेड़ासा समय शान्तिके साथ एकान्तमें इस विषय पर विचार करनेके लिए नियुक्त करें। इस समय अपने चित्तको अशुभ योगसे रोक कर शान्त भाव धारणकर अपनी आत्माका किंचित् चिन्तवन करें। निश्चयसे यह हमारे लिए बड़ा ही उपयोगी और लाभदायक होगा। क्यों कि कई कारणोंसे इसकी आवश्यकता है। प्रथम तो इससे यह लाभ होगा कि हम अपने हृदय और अपने जीवनमें से बुराईके बीज निकाल सकेंगे। दूसरे यह लाभ होगा कि हम अपने जीवनके उद्देश्य उच्चतर बना सकेंगे। तीसरे यह लाभ होगा कि हम उन बातोंको स्पष्ट रूपसे देख सकेंगे जिन पर हम अपने विचारोंको जमाना चाहते हैं। चौथे यह लाभ होगा कि हम यह जान सकेंगे कि हमारे आत्मामें और परमात्मामें क्या भेद हैं और उनमें क्या संबन्ध है। अतएव उसकी भक्तिमें अधिक लीन हो सकेंगे। पाँचवें यह लाभ होगा कि हम अपने दैनिक सांसारिक वितंडोंमें यह याद रख सकेंगे कि वह सर्वशक्तिमान अनंत ज्ञान अनंत दर्शन संयुक्त परमात्मा जो जगद्गुरु है वही हमारे जीवनका मूल और हमारी सम्पूर्ण शक्तियोंका स्रोत है और उससे पृथक् न

हममें जीवन है और न शक्ति है। इसी बातको अच्छी तरह समझ लेना और सदा इसके अनुसार चलना मानों ईश्वरको प्राप्त कर लेना है। इसीका नाम ईश्वरदर्शन, सत्यार्थ भक्ति और शुद्ध उपासना है। ईश्वर हमारे घटमें विराजमान है। हमसे पृथक् नहीं है। इस विचारके परिपक्व हो जानेसे हमारे हृदयमें ईश्वरीय ज्ञानका प्रकाश होने लगता है और जितना ही यह प्रकाश बढ़ता जाता है उतना ही हमारा ज्ञान, अनुभव, और बल बढ़ता जाता है। वास्तवमें आत्मामें परमात्माका बोध होना ही समस्त मतों और धर्मोंका सार है। इससे हमारा प्रत्येक कार्य धर्मका एक अंग बन जाता है और हमारा उठना बैठना, चलना फिरना, खाना पीना भी दर्शन, पूजा और व्रत उपवासके सदृश हो जाता है। इसमें कुछ सन्देह नहीं। जो धर्म मनुष्यकी प्रत्येक क्रिया पर घटित नहीं होता, जिस धर्ममें प्रत्येक कार्यसे पुण्य पापका बंध नहीं होता वह नाम मात्रका धर्म है, वास्तवमें धर्म नहीं है। संसार भरके अवतारों, महात्माओं, धर्मोपदेशकों और सिद्धान्तवेत्ताओंने चाहे वे किसी युगमें हुए और किसी देशमें हुए, इस बातका एक स्वरसे समर्थन किया है। चाहे और कितनी ही बातोंमें उनमें अन्तर हो परन्तु यह सिद्धान्त सर्वमान्य है।

महात्मा ईसा (Christ) का यह कथन अक्षर अक्षर सत्य है कि जब तक तुम छोटे निष्पाप बालकोंकी सदृश न हो जाओ तब तक तुम ईश्वरीय राज्यमें प्रवेश नहीं पा सकते। जैसे छोटे बालकोंकी पापमें प्रवृत्ति नहीं होती, उनमें क्रोध मान माया लोभकी तीव्रता नहीं होती, वे पीतल और सोनेको बराबर समझते हैं, इसी तरह तुमको भी उचित है कि अपनी कषायोंको मंद करो, हृदयको शुद्ध करो और बुरी वासनाओंको दमन करो। सदैव परमात्माका स्मरण

करो और अपने आत्माको परमात्मा बनानेका उद्योग करो। ऐसा करनेसे तुमको ईश्वरीय राज्य अर्थात् मोक्ष मिल सकता है।

आजकल प्रायः इस विषयकी और लोगोंका बहुत कम लक्ष्य है। वे रात दिन सांसारिक कार्य व्यवहारमें ऐसे लगे रहते हैं कि आत्मिक उन्नतिका विचार तक भी नहीं करते। इसी कारणसे लोग नित्यशः जडवादी नास्तिक होते जाते हैं। आत्मा परमात्मा शब्दोंसे ही उन्हें घृणा हो जाती है। यह बड़ा भारी दोष है। इसका परिणाम बड़ा भयंकर होता है। ऐसे मनुष्योंको सांसारिक विषयोंमें भी प्रायः सफलता नहीं होती, कारण कि उनके जीवनका कोई उद्देश्य नहीं होता और इस कारणसे उन्हें कभी संतोष या तृप्ति नहीं होती। इससे हमारा यह तात्पर्य नहीं कि सांसारिक कार्य व्यवहारको ही छोड़ दिया जाय और सिरमुँड़ाकर भगवें वस्त्र धारण कर लिये जावें अथवा घर छोड़कर जंगलमें वास कियाजाय। आज कल हम लोगोंकी शक्तियाँ ऐसी नहीं हैं कि रात दिन ध्यान आदि कर सकें। इसके अतिरिक्त जब तक गृहस्थीमें रह कर नियमानुसार क्रमबद्ध उन्नति न की जाय तब तक यह सम्भव भी नहीं। आजकल जितने भगवें वस्त्रधारी अपनेको साधु महात्मा, नियमी संयमी कहते हैं वे प्रायः सब बहुरूपये हे। अतएव हमको कोई अवश्यकता संसार छोडनेकी नहीं है। हमारा अभिप्राय यह है कि हम प्रथम यह विचार करें कि हम कौन हैं, कहाँसे आये हैं और क्यों आये हैं। तदनन्तर अपने जीवनका उद्देश्य स्थिर करें, अर्थात् इस बातका निश्चय करें कि हम अपने आपको क्या और कैसा बनाना चाहते हैं। बस, फिर चाहें कोई काम करें, सदैव उस उद्देश्यको अपनी दृष्टिके सामने रक्खें। ऐसा करनेसे हमको प्रत्येक कार्यमें सफलता होगी और हम बहुत जल्द अपनी मनोकामनाको पूर्ण कर लेंगे।

जो मनुष्य प्रति दिन थोड़ासा समय एकान्तमें आत्मचिन्तवनमें व्यय करता है और अपने उद्देश्य पर दृष्टि रखकर अपने और परमात्माके सम्बंधको पहचानता है वह मनुष्य सांसारिक कार्योंके लिए भी बड़ा योग्य और चतुर है। वही मनुष्य अपनी बुद्धि और चतुराईसे कठिनसे कठिन कार्यको भी भली भाँति कर सकता है। वह वर्षोंके लिए नहीं बनाता किन्तु शताब्दियोंके लिए बनाता है। क्यों कि भलाई और सचाईका असर वर्षोंसे नहीं मिटता। वह नियत समयके लिए ही काम नहीं करता किन्तु अनंत कालके लिए तैयारी करता है। क्योंकि जब मृत्यु आयगी उस समय इन्द्रियदमन, चित्तनिरोध, आत्मनिर्भरता और ईश्वरानुभव, यही वस्तुयें उसके साथ जायँगी। क्योंकि इन्हीं वस्तुओंकी उसके पास बहुल्यता है। उसको जीवन मृत्युसे कुछ भय या शंका नहीं। क्योंकि वह जानता है, समझता है और उसे श्रद्धा है कि परमात्मा मेरी रक्षा करनेके लिए तैयार है। वह निडर जहाँ चाहे जाता है। क्योंकि वह जानता है कि मैं जहाँ जाऊंगा सर्वज्ञदेव मेरी रक्षा करेंगे और कदापि मुझे अंधकूपमें न छोड़ेंगे, किन्तु सदैव मुझे लिये जायेंगे यहाँ तक कि अंतमें मैं उस अनंत अक्षय स्थान पर पहुँच जाऊंगा जहाँसे फिर कभी वापिस न आऊंगा और जहाँ अनन्तदर्शन अनन्तज्ञानका धारी हो जाऊँगा। उसी स्थानका नाम मोक्ष है।
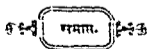
हिन्दीग्रन्थरत्नाकर–सीरीज़ ।

हिन्दी साहित्यको उत्तमोत्तम ग्रन्थरत्नोंसे भूषित करनेके लिए इस ग्रन्थमाला-
निकालनेका प्रारंभ किया गया है। हिन्दीके नामी नामी विद्वानोंकी सम्मतिसे
मके लिए ग्रन्थ तैयार कराये जाते हैं। प्रत्येक ग्रन्थकी छपाई, सफाई, कागज,
जैल्द आदि सभी बातें लासानी होती हैं। स्थायी ग्राहकोंको सब ग्रन्थ पौनी
ीमतमें दिये जाते हैं। जो स्थायी ग्राहक होना चाहें, उन्हें पहले आठ आना
जमा कराकर नाम दर्ज करा लेना चाहिए। अब तक इसमें जितने ग्रन्थ निकले
, उन सबहीकी प्राय: सब ही पत्रोंने एक स्वरसे प्रशंसा की है। नीचे लिखे
ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं:—

१–२. स्वाधीनता।

यह हिन्दी साहित्यका अनमोल रत्न, राजनैतिक, सामाजिक और मानसिक स्वाधीनताका अचूक शिक्षक, उग्र स्वाधीन विचारोंका कोश, अकाट्य युक्तियोंका आकर और मनुष्यसमाजके ऐहिक सुखोंका पथप्रदर्शक ग्रन्थ है। इसे सरस्वतीके धुरन्धर सम्पादक पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदीने अँगरेजीसे अनुवाद किया है। साथमें मूल लेखक जानस्टुअर्ट मिलका बड़ा ही शिक्षाप्रद जीवनचरित है। इसे जैनहितैषीके सम्पादक नाथूराम प्रेमीने लिखा है। मूल्य दो रु०।

३. प्रतिभा।

मानवचरितको उदार और उन्नत बनानेवाला, आदर्श धर्मवीर और कर्मवीर बनानेवाला हिन्दीमें अपने ढंगका यह पहला ही उपन्यास है। इसकी रचना बड़ी ही सुन्दर, प्राकृतिक और भावपूर्ण है। मूल्य १) रु०

४. आँखकी किरकिरी।

जिन्हें अभी हाल ही सवालाख रुपयेका सबसे बड़ा पारितोषिक (नोबल प्राइज़) मिला है, जो संसारके सबसे श्रेष्ठ महाकवि समझे गये हैं, उन बाबू रवीन्द्रनाथ ठाकुरके प्रसिद्ध बंगला उपन्यास 'चोखेरबाली' का यह हिन्दी अनुवाद है। इसमें मानसिक विकारोंके, उनके उत्थान, पतन और घात प्रतिघातोंके बड़े ही मनोहर चित्र खींचे गये हैं। भावसौन्दर्यमें इसकी जोड़का दूसरा कोई उपन्यास नहीं। इसकी कथा भी बहुत ही सरस और मनोहारिणी है। मूल्य १॥) रु०।

५. फूलोंका गुच्छा।

इसमें ११ गल्प आख्यानों या गल्पोंका संग्रह है। इसके प्रत्येक पुष्प
सुगन्धि, सौन्दर्य और माधुर्यसे आप मुग्ध हो जावेंगे। प्रत्येक कहानी जैसी
सुन्दर और मनोरंजक है, वैसी ही शिक्षाप्रद भी है। मूल्य दश आने।

६. चौबेका चिट्ठा।

बंगभाषाके प्रसिद्ध लेखक बाबू बंकिमचन्द्र चटर्जीके लिखे हुए 'कमलाका
न्तका दफ्तर' का हिन्दी अनुवाद। हँसी दिल्लगी और मनोरंजनके साथ इस
ऊँचे दर्जेकी शिक्षा दी गई है। देशकी सामाजिक, धार्मिक और राजनैति
बातोंकी इसमें बड़ी ही मर्मभेदी आलोचना है। मूल्य ग्यारह आने।

७. मितव्ययिता।

यह यूरोपके प्रसिद्ध लेखक डा० सेमुएल स्माईल्स साहबकी अँगरेजी पुस्तक
'थिरिफ्ट' का हिन्दी अनुवाद है। इस फिजूल खर्ची और विलासिताके जमा
नेमें यह पुस्तक प्रत्येक भारतवासी बालक, युवा, वृद्ध और स्त्रीके नित्य स्वाध्या
करने योग्य है। इसके पढ़नेसे आप चाहे जितने अपव्ययी हों, मितव्य
संयमी और धर्मात्मा बन जावेंगे। बड़ी ही पाण्डित्यपूर्ण युक्तियोंसे यह पुस्तक
भरी है। इसमें सामाजिक, नैतिक, धार्मिक और राष्ट्रीय आदि सभी दृष्टियोंसे
धन और उसके सदुपयोगोंका विचार किया गया है। स्कूलके विद्यार्थियोंका
इनाममें देनेके लिए यह बहुत ही अच्छी है। मूल्य चौदह आने।

८. स्वदेश।

श्रीयुक्त डाक्टर रवीन्द्रनाथ ठाकुरकी एक निबन्धमालाका अनुवाद है। इ
मिला कर आठ निबन्ध हैं। प्रत्येक निबन्धमें वे वे बातें कहीं हैं जिन्हें आपन
कभी न सुनी होंगी। इसे पढ़कर आप भारतवर्षका और उसकी सभ्यता, समा-
जरचना और राजनीतिका असली स्वरूप देख सकेंगे। प्रत्येक स्वदेशाभिमानीके
अध्ययन करने योग्य ग्रन्थ है। मूल्य दश आना।

और कई अच्छे अच्छे ग्रन्थ तैयार हो रहे हैं।

मैनेजर, हिन्दी-ग्रन्थरत्नाकर कार्यालय.